

निमात्रिनी वलु. ६ वची सवतु सवतु माह कावददाक मासनी चोदी कामाची दिव प्रिये लीची दिव
 यालमिमाद वी. ऊगदानंद प्राचनी व मायसिउ प्रययी च अक्षि सिद्धि व लयुदावधन्या य लामहा रा
 ५ मा. अक्षि नाक्षि मविक्र मा. ऊगद कोरि नोदिद्या संका मा मात्र ली ६ राभाक्षा क्रिया लमिमाद वी सी
 लनी ध्मा नध्यायिनि ययिनी य यध्व जीव यय मा सन मा सनी वास द प्रिय महा न जा. रु मव ल्यु.
 साक वीचि का मानिधी चद वी. पु लय सुक धा वी ली नि धन कट मो चर. धा सा गा च ध न यि या व न

ना न यु म ३

धातुक मरु आदी दिव्या रुच व रुचिनी रा मा मची सव व दानां. च लक्ष न लव धिनि लु नु मा रा
 विनिदु वी. सा वा रा वा वि व जी ली वा व न अकि वि न मा च दि यि नि क्ल स च दनी वरि द नी सव.
 मा ला नां सु फ या मा र क्षा रु वि वा वा यु ली व द मा मा च गु द्यं वा सि नी व स च ध्व नी वि सा वा क्षी
 च रु व क वि हा वि ली ॥ न था गा नि महा व्या वी ज ली री व क म धा न ल्व प्री वि द्या वि धु का ला रु
 गद वी वा ध नि स व स वा नां वा धा रु क रु म स जी व आ ना दि मा कि सं य नं अ व शा द य सा वि

नीवास वीथे साधनिरुद्धा जी वृथाजि नविकु मा वदस नी वृद्ध मा भे नां न द्य मा व य वें द
 क्ष नी वा वा गी ल्य जी म हा सा नि रा पी धा जी धनं द या रिक वृथा धा व ही सिद्धा था गी नी था ग
 वि मा ल्य जी वा म ना रु जी म हा का नि सी सा रू यी य द ह नी वा सा र्थ वा रु क या दि द्य स र्व मा था २
 वा मा ल्य का वा न म म रुं म हा द ती स र्व स त्वा र्थ दा यी नी व न म रु दि वा नी य स र्थ य व द स
 क्ष वा न मा म रु न ॥ अ स्था रु व न मं ना म रु क्ता र ऊं य थ दि मां व या धा नि नि य नी सिद्धि मि थि

३२

२५ म गो ल

मा था म ना य था वा रु द ह नं क मं या थं मा न मा न रु क्ता रू मा रु लं व म हा र्व द्य य य त्या न मा व ना त्ता म
 रु द कं ॥ अ थ वा सी ल सं य त्ता म रु क्ता रू मा रु रु ते न वी य य वृ दं य ता क रु वृ य ता य य द न न वा
 वि य रुं नि क लं य आ द य म रु क्ता रू य नं व रु न रु मि रु रं या श्री य धा या म रु मा व नी म वा आ र्थ
 ली व रु द्वा वा ना मा रु रु व स मं कं वृ द्वा रु मि रु य वि स मा यं ॥ लू न न मा रु वा व ही आ र्थ व
 ऊ वि द यी लो वा न मा व द्वा य वा रु व म रु क्ता रू न म रु क्ता रू म रु रु ग वा नू व रु वृ वि द नि मा व रु व

ऊ ३

भावी चंद्रक म मय मधि स्या च वरु या वि सु वृ द्वा न सा व न वरु स मा धि स मा य न्न ४६ न भा वरु या नि
 द्वा न सा व न स व वृ द्वा ना धि स्या ना च महा को ध रं तु न वरु मा च य दं सा य न सा वा अरुि य मरु
 क य स तां हृ द्भि नं स व ना य नि द्म नं स व ना य ना जि नं स व स ता वि द या य ले क रं स व स ता त्मा द
 न क रं स व वि द या च द न क रं स व वि द या रु रु क रं स व क मा वि ध र न क रं स व क मा वि द या य न क
 रं स व गु हा त्मा द न क रं स व य ह वि मा रु ल क लं स व र ना य क य ल क रं स व वि द या म न क रा य न
३

मप

क रं अ सि द्वा ना सि द्वा क रं सि द्वा नां चा यि ना स न क रं स व क र य दं स व स ता नां च द्म कं सा वि कं
 यो ह कं स व स ता ना न रु न क रं स व स ता नां मा रु न क रं क रं मं म रु म हा व नं स व वृ द्वा न सा वा य रु
 या वरु या वि सु य रा य न शान भा च त्रु या य वा न म ४६ वरु या ल य न भा म हा रु रु म ना य न य
 रा न य था वा ड रु ट २ ना ट य २ रु ट २ रु ट २ रु ट २ रु ट २ य न २ रु ट २ य य २ स व स ता नि द्वा ध य २
 स र्हा ध य २ रु म २ स र्हा म य २ स व वृ द्वा धि नि आ क ट २ स र्हा क ट य २ स व रु न य ट २ स र्हा य ट य

१मघादि यां वज १हू टय वज १क ट १वज १मथ वज १नपम रुनी लवज सुवजा य साहावा
 डं हू लानि १गृह १क ३ १मिपि १चल १क ३ १वज विजया य साहावा डं वज किलिकि लाय
 साहावा डं क ट १म ट १व ट १यभा टय भा न ना य साहावा डं च ३ १विच ३ १हू स ३ १मा ३ य
 वज विदा ३ ला य साहावा डं चि ३ १सि ३ १म हा किलिकि य साहावा डं वज १का ट वज किलिकि
 ला य साहावा डं च ३ १च ३ किलिकि ला य साहावा डं नम य १वज किलिकि ला य साहावा डं हन १

[illegible]

दिनकल्पमल्लसर्वसकवात्रज्ञप्रियमशंमहाभासाशुशिविष्टानिवाङ्ककलगमलः
कालमहायासादाशिविष्टानिवाङ्ककलगमलः
नकविदवमात्रयुक्तिस्तद्वमालंलया नमरुंशावमालंलया नवनयाशुवाधिविराया
शिविष्टानिवाङ्ककलगमलः
शुचिप्रविष्टमहासावसर्वविनि यत्तदवमानुषासुत्रगन्धर्वधुलीकाशुगर्वनाशिवि न

२५
पञ्चम

महाप्रविष्टमहासावसर्वविनि यत्तदवमानुषासुत्रगन्धर्वधुलीकाशुगर्वनाशिवि न
यत्तदवमानुषासुत्रगन्धर्वधुलीकाशुगर्वनाशिवि न
यत्तदवमानुषासुत्रगन्धर्वधुलीकाशुगर्वनाशिवि न
यत्तदवमानुषासुत्रगन्धर्वधुलीकाशुगर्वनाशिवि न
यत्तदवमानुषासुत्रगन्धर्वधुलीकाशुगर्वनाशिवि न

[illegible][illegible]

[illegible]

तसंस्कारा मधु लमदां यजां कृत्वा यद्विष्णुं सहस्रं कुरुयाम्यथा विरुवा रुवा नृपय न स वरु
 यादना मं लिखित्वा धर्मक्षत्रु न हं संस्कारा य संयुय धर्म क्षत्रु वादना वा म आद मृनि क या को व
 यित्वा म स क क विंशानि च कृत्वा लिखित्वा न न न वा वां सहस्रं वा संयुय कृत्वा य ना का य य ध य दि
 य ग ध न श या दि कं स ध य जा रिः य क य न म म मां स ध न था ग ना धी य दि क या ना म धा व नी वा च
 य न म अ न द्वा क न न च य मा दि य च य न म य धे वं क न द्या व मि ना यु ना म धा वि ना र दि यी मि

१०

२३

मदान नमं स फदि ना यः स फ मा सा यः त्या ग मि धा मि म स फ मा सा यः स फ व र्था वि डी व नि म स फ
 व र्था यः स फ व र्था वि डी व नि म य र मा य स नं डी व नि व र्था मि मा कृ व नि म म हा य रा य वि मू का र व
 नि व र्था य र व स य न व र व नि म आ य उ र्था वि डी य ना म धा व नि म मा फः ॐ ॥ १० न मा र
 ग यः आ य य न स व री ना य य न मा र व र य य न मा अ मि ना रा य न था ग ना या ह क स मा कं
 व द्या य न मा आ यो व ला कि न ध वा य वा वि स ता य म हा म ता य म हा का व नी का य न मा म हा

लममया फायदा द्विसत्ताय मदा सत्ताय मदा का पूर्णा कायमवामनत्वं नमस्यामित्वां नमस्यामि
 वामन ॥ रुगवर्ग नयिमा चो यष्टि सव चो याष्टि यष्टि सव चो निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि
 ॥ निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि
 दध्यात्मिका रुगवर्ग निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि
 दध्यात्मिका रुगवर्ग निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि निरुक्तानि

[illegible]

ॐ
ॐ

यसमं रुगवर्गिनि यि सा वि य धू ल व प्री ॥ रु म श वि रु न रु न रु न म ल स्वा हा ॥ उं गो वि गंधा वि
व धु वि मा न गी य को सि स्वा हा ॥ उं कु न म क ल क र य धू ल व प्र स्वा हा ॥ न मः स व न व रा णं म
हा न व लानां रु ग व र्गि नि यि सा वि य धू ल व प्री यि सा वि स्वा हा ॥ उं यि सा वि य धू ल व प्री दी ॥ रु रु रु ॥ १२
हू यि सा वि स्वा हा ॥ ॥ आ र य धू ल व प्री म हा मा य प्री य स म नी ना म धा नी स मा यः ॥ ॥ ॥
॥ रुं न मा रु ग ह्ये आ र य सा वि प्री य ॥ न व म या ण न म को सा स म य रु ग वान् ॥ अ व ह्या वि ह नि स म

क म व न अ ना थ यि धु द ह्या रा म म रु ना सि रु स ध न सा दं म रु क या द णी रु रु स नः सं व रु ले धु मः
हा णा व क वा धि म लेः म हा म लेः न रु स ल रु ग वा नी रु रु ना मा म रु य न स ॥ अ मि नि रु रु वा मा री
वी ना म द व मा सा स य रु रु म सा य व ना अ न ग रु नि ॥ सा न रु ह्या न न ग रु न न व रु न नी न रु ध न
न म स न न म रु न न द धु न न द रु न न ण ह्य म य ग रु नि ॥ या यि न ह्या रु रु वा मा री वी ना म द व
मा र्या ना म ज्ञा ना नि ॥ सा यि न रु ह्या न न ग रु न न व रु न नी न रु ध न न म स न न ग रु न न द धु

न नदम न नम नम मय गच्छिने ॥ माहं रिक्त वा मा जी जी नाम द व ना यां नाम दाना नि ॥ अहं मयि
न ह मयि न न गृह न व द न न मय न न मय न न द व न न द म न न मय गच्छिने ॥ ॐ मा नि ॥
म नु य दानि र वी न ॥ न द थ ॥ उं य द क म सि य द क म सि उ द य म सि व र म सि अ क म सि न क
म सि उ ला म सि व न म सि गु ल म सि वि व र म सि म ह सी व र म सि अ न क न म सि सा हा ॥ उं मा जी
जी व य थ मा य य उं ल य थ मा य य य द क क ल नो मा य य य द न य द न मा य य य द क क

१३

उ न मां य य ह म क य न मा य य य य य न मां य य य अ गि र य मां य य य उ द क
क य मां य य य य य य य य य य य म क य मां य य य य य ल व अ न क ल य म क न य
म म क न य म क न म य क य द न म य क य य न म य क न य थ ॥ अ ल न ल म क ल म
व म क न य य य य मां य
म न मा र ग य य य मा जी जी व वा मा य

विवाधिसत्त्वमयसमस्तमवलाकमनाद्रुतायवद्वाधिसत्त्वमननरागवक्रमनक. ७
नमस्तुभयदक्षिणाकृत्ययदेवमायप्रतीनययसमादृष्टययकमाययालीलया
त्ययदमवलाकवक्राकरीलकृत्यासददययानिमाययवक्रमनदवाचनयहा
रुगवक्रुडयाडयाययवक्रावक्रयाष्टकवाःकवक्रयाष्टनसत्त्वविह ०यकि ॥८
यदवक्रुवक्रि ॥९॥१०॥११॥१२॥१३॥१४॥१५॥१६॥१७॥१८॥१९॥२०॥२१॥२२॥२३॥२४॥२५॥२६॥२७॥२८॥२९॥३०॥३१॥३२॥३३॥३४॥३५॥३६॥३७॥३८॥३९॥४०॥४१॥४२॥४३॥४४॥४५॥४६॥४७॥४८॥४९॥५०॥५१॥५२॥५३॥५४॥५५॥५६॥५७॥५८॥५९॥६०॥६१॥६२॥६३॥६४॥६५॥६६॥६७॥६८॥६९॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥७६॥७७॥७८॥७९॥८०॥८१॥८२॥८३॥८४॥८५॥८६॥८७॥८८॥८९॥९०॥९१॥९२॥९३॥९४॥९५॥९६॥९७॥९८॥९९॥१००॥

[illegible]

मयश्च यथानुक्रमवर्धनं सर्वथा यथानुशानि न श्रुताः यजिनाः यजिश्च निदि
हृत्वा यमानि माधव वाचा मन्त्राश्च विदितव्यमहा प्रभाः यथा श्रुतं साधु वयं न माधु वमा
नृणां भगवन्मयं निवृत्तं यथा महाकर्मज्ञं न ज्ञासां यथा द्रव्यं यथा मित्रं यथा धियथा क
मः अथ यत्नं वाचानां कर्मनिष्ठं यथा वा न रं सम्यक् वदः स हृदयकं च वा विविधि
नाना मन्त्राणां लोकेनैवा यथानुवर्त्यं गृह्यमाणं द्विष्टं वदं यथा निष्ठां अथ यत्नं कुरुष्व ददत

सर्वग्राह्यादि त्याद या उक्ता या मन्त्रा र्वावर्तं नैवा कर्मनिष्ठं यथा वा न रं सम्यक् वदः स हृदयकं च वा विविधि
यथा श्रुतं साधु वयं न माधु वमा
नृणां भगवन्मयं निवृत्तं यथा महाकर्मज्ञं न ज्ञासां यथा द्रव्यं यथा मित्रं यथा धियथा क
मः अथ यत्नं वाचानां कर्मनिष्ठं यथा वा न रं सम्यक् वदः स हृदयकं च वा विविधि
नाना मन्त्राणां लोकेनैवा यथानुवर्त्यं गृह्यमाणं द्विष्टं वदं यथा निष्ठां अथ यत्नं कुरुष्व ददत

नं विषयनाशनं श्री मातृ चंद्र वधी वधश्चक्रं चंद्र कुदी वधु संपदं नं यथा नु संपदा नं नं
 अथ यत्नं रागादानं श्री कृष्णं नृणां धामा नारदं श्री भक्तं वधु वधा धामा यथा मनुष्य साधनं
 श्री भक्तं मया कृता वधे साधनां श्री मां वध साधनां श्री कृष्णं माता साधनां श्री वध साधनां
 श्री नारायण साधनां श्री भक्तं वध साधनां श्री कृष्णं वध साधनां श्री कृष्णं वध साधनां
 श्री कृष्णं वध साधनां श्री कृष्णं वध साधनां श्री कृष्णं वध साधनां श्री कृष्णं वध साधनां
 श्री कृष्णं वध साधनां श्री कृष्णं वध साधनां श्री कृष्णं वध साधनां श्री कृष्णं वध साधनां

[illegible]

॥ सुसादयदीपराजनं कदम्बं यथाऽहं मया सा च यथा सा यथा वृत्ताऽहं च यथा सुनीति कमायः
हीमासवसाह्मा सुग्रायादीनि वक्रां गवामा वायनमः साह्मा याग्रादीनि वाक्यं वृद्धयाम
वर्धय नमः वृद्धा यथा साह्मा नवायां लोहमेव वर्धय नमः वृद्धिनिगमाय वृद्ध्या न यथाऽहं वा सा यथा यनमः
साह्मा याग्री नमः काष्ठेय न यथाऽहं सुमन्त्रा रुमायनमः साह्मा वायवां सानिध्वानि लोहं सवृ
ष्टवृष्टाय नमः साह्माऽहं रुच्यं जन सानिधाय वाहवर्धय नमः सुमन्त्राय यथा यनमः साह्माऽहं

॥ सायादि षीः धृमानवर्धय सानिधायऽहं कानि कन वसाह्मा यवदा वृद्धय गवान् दक्षिणवाय
वर्धयानि याग्री मन्त्रा लोहनाथऽहं रुच्यं नमः ऋणीभ मधुलवाक्क यवा रुच्यं काष्ठं सवृष्टाह
सां॥ यवदक्षिण काष्ठं सवृष्टनक्षत्रां॥ दीक्षय याग्री मकाष्ठं सवायुदवां॥ याग्री मारुच्यं काष्ठं
रुष्टादि काष्ठं महाविद्या मं उल्लापवाह यववर्धय नमः दीक्षय नीतिवृद्धयः याग्री मनीतिवृ
याह्वं कवं वृष्टा रुच्यं याग्री॥ सादित्य सादीनां साम सादित्य कानं मंगलमाय कवृद्धयः

साद्य नयन वृहस्य नि सा दी वरु कं ॥ १ ॥ क सा यय क भ सा नि ध व स्य मा वरु कं ॥ २ ॥ वा द क रु नि
 ल कि ण न य क्ता णां व लि ण वृ न वा य स्य दी धे र कं ॥ ३ ॥ वि वृ द क सा द धि मा वरु कं ॥ ४ ॥ वि वृ द क सा द धि
 वरु कं ॥ ५ ॥ वि वृ द क सा द धि मा स र कं ॥ ६ ॥ सी ध स म न य थान् क म व र्ण रू द न य थान् द यं य थान् क म
 व र्ण न ध यं द यं य थान् क म व र्ण रू द न य ना का द या य थान् क च न यां म व स व यां य दी यं
 द यं य थान् क म व र्ण न य थान् क च न यां क रु द्या णा य न म ध र्म स वं का ज यि त्वा यं च व लं यि त्वा

याचंदयं सञ्जयददयामिति नू मासि वज्रयासि नववहाणां मनुयदाददयानियाठनीसः
 घानिरयथान्क्रमवत्स्नगधर्मं लकनदादणां गुलमध्यायुज्ययनयानि नातुमुत्तयत्र
 यादिरासाजननञ्जयंदत्ता मृगुलुवगनदायान कर्कजय नयध्यात्यनवज्रयाहवः
 रुमाहकाना मध्यावली मनुयदायान सयवायान्चावयनयानि नतः सर्ववहावका
 कविशक्तिदाविदयहान्मावयि शक्तिगतरः यव्यायिदिद्यो यत्तविशक्ति यनजव

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

ला, या वच्चुदणी गृह नमस्तु नमश्च यजुषि लादि नदि नः सकवचान वाचयन्मा नः य
 रुमाया महा नमः यजुषि कला अहा नमः वाचयन्मा नः सानवन वामे वामि मृत्यु रुय
 रुवि शानि लाया नमस्तु नमस्तु यीय रुयं नरु वि शानि ला नो ज्ञानि सान र
 वि शानि सर्वगुहा यि नमस्तु रुवि शानि ला नमस्तु वचन सानि अथ नमस्तु गृहमा
 वरु गवन्नि नमस्तु य नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु

१३

नमः

अत्रि सत्ता महा सत्ता सा व सत्ता वीर य य ल द व मान या सत्ता वचन धर्म लोकार वा वना शा यन
 यज्ञ दानि ना नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 यु मा वा रु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु
 वरु सत्ता नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु नमस्तु

धर्मरत्न वज्राचार्य मुस्त श्री महाबिहारी

II-283

२५